राल्स के न्याय सिद्धांत का विष्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मनीता कौर विरदी

सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

षासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र) 8839191578

सारांषः

न्याय की अवधारणा राजनीतिक दर्षन की महत्वपूर्ण अवधारणा है। समकालीन उदारवाद ने इस अवधारणा को नए ढंग से पेष किया है। न्याय की समस्या का इतिहास काफी पुराना है। मानव चिन्तनषील प्राणी होने के नाते राजनीतिक समाज के प्रादुर्भाव से ही अपने लिए न्याय की मांग करता आया है। न्याय की समस्या मुख्यता यह निर्णय करने की समस्या है कि समाज के विभिन्न वर्गो व्यक्तियों और समूहों के बीच विभिन्न वस्तुओं, सेवाओं, अवसरों लाभों आदि को आवंटित करने का नैतिक व न्यायसंगत आधार क्या हो। इसी कारण अनेक विचारकों ने स्वतंत्रता तथा समानता के विरोधी दावों को हल करने के लिए न्याय सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। उन्ही विचारकों में से जॉन राल्स है। जॉन राल्स ने न्याय सिद्धांत में महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार किया है, जिनमें से प्राथमिक वस्तुओं, सेवाओं, और लाभों की समस्या प्रमुख है। जॉन राल्स का न्याय षुद्ध प्रक्रियात्मक व वितरणात्मक स्वरूप रखता है। भारत के संदर्भ में जॉन राल्स की सामाजिक न्याय की अवधारणा काफी महत्व रखती है। जॉन राल्स की सामाजिक न्याय की अवधारणा भारतीय समाजवादी दर्षन और सर्वोदय के विचार के काफी निकट है। राल्स के सिद्धांत ने किस प्रकार राजनीतिक सिद्धांत एवं दर्षन के क्षेत्र में बदलाव किये एवं राजनीतिक सिद्धांत के पतन को उत्थान में परिवर्तित करने का कार्य किया, आदि का अध्ययन करने का छोटा सा प्रयास इस षोध पत्र में किया गया है।

पारिभाषिक षब्दावली : न्याय, राजनीतिक सिद्धांत, षुद्ध प्रक्रियात्मक, वितरणात्मक

प्रस्तावनाः–

जॉन रॉल्स का जन्म 21 फरवरी 1921 को अमेरिका में हुआ। जॉन रॉल्स की बचपन से ही सामाजिक समस्याओं को समझने में रुचि थी। जॉन रॉल्स एक विलक्षण प्रतिभा रखने वाले व्यक्ति थे। अपनी परिपक्व आयु में जॉन रॉल्स ने सामाजिक विषमताओं को समझकर अपने विचारों को पत्र–पत्रिकाओं में छपवाकर एक बुद्धिजीवी होने का परिचय दिया। जॉन रॉल्स ने 1950 में लिखना प्रारम्भ किया और उनका तात्विक रूप से प्रथम विचार न्याय उचितता के रूप में' सबसे पहले 1957 में प्रकाशित हुआ। इसी विचार को आगे जॉन रॉल्स ने अपने न्याय सिद्धान्त' के आधार के रूप में मान्यता दी। हावर्ड विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक रहते हुए जॉन रॉल्स ने अपनी न्याय की संकल्पना को विस्तृत आधार प्रदान करके 1971 में अपनी प्रथम पुस्तक Theory of Justice 1971 ई0 में प्रकाशित कराई। इस पुस्तक में उसने न्याय पर आधारित एक आदर्श समाज की विवेकपूर्ण तथा तर्कसंगत सरंचना प्रस्तुत की। इसी पुस्तक के कारण जॉन रॉल्स को राजनीतिक चिन्तन के पुनरोद्य का जनक होने का गौरव प्राप्त हुआ। उसके बाद जॉन रॉल्स की दूसरी रचना 1993 में Political Liberalism के नाम से प्रकाशित हुई।

अनेक विचारकों ने स्वतन्त्रता तथा समानता के विरोधी दावों को हल करने के लिए अपने न्याय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। जॉन रॉल्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Theory of Justice में अपना न्याय का सिद्धान्त प्रस्तुत करते हुए उपयोगितवादियों के विचारों का खण्डन किया है। उसने हेयक के उस विचार का भी खण्डन किया है जो हेयक ने समकालीन उदारवादी चिन्तक होने के बावजूद भी प्रगति बनाम न्याय के विवाद में न्याय की अवहेलना करके प्रगति का पक्ष लिया है। जॉन रॉल्स ने अपने न्याय सिद्धान्त की शुरूआत में ही न्याय के बारे में यह तर्क दिया है कि अच्छे समाज में अनेक सदगुण अपेक्षित होते हैं और उनमें न्याय का भी महत्वपूर्ण स्थान है। न्याय उत्तम समाज की आवश्यक शर्त हैं। न्याय के बिना समाज की उन्नति और उत्तम समाज की स्थापना दोनों ही असम्भव है।

अध्ययन क्षेत्र :– प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र जॉन राल्स के न्याय सिद्धांत पर आधारित है।

आंकड़ों के स्त्रोत :– इस शोध कार्य के दौरान पुस्तकालय में उपलब्ध पत्रिकाओं, लेखों तथा इंटरनेट का उपयोग किया गया।

शोध प्रविधि :– प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रंथालय अध्ययन पद्धति, एवं विष्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

विष्लेषण :–

जॉन रॉल्स अपने न्याय सिद्धान्त की शुरूआत इस समस्या से करता है कि न्याय क्या है? इस समस्या का समाधान जॉन रॉल्स इस बात में तलाश करते है कि न्याय की समस्या प्राथमिक वस्तुओं और सेवाओं के न्यायपूर्ण व उचित वितरण की समस्या है। इस सिद्धान्त का सम्बन्ध अवसर को उचित समानता व आय को पुनर्वितरण से

है। जॉन रॉल्स ने इस सिद्धान्त में भेदमूलक सिद्धान्त तथा अवसर की उचित समानता का सिद्धान्त, दो सिद्धान्त जोड़े हैं। जॉन रॉल्स का कहना है कि सम्पत्ति तथा आय का बंटवारा समान हो, यह आवश्यक नहीं है, लेकिन यह असमान वितरण ऐसा होना चाहिए कि कम सुविधा प्राप्त व्यक्तियों को भी अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो। इसी तरह अवसर की समानता के बारे में जॉन रॉल्स ने कहा है कि पद और सत्ता सभी व्यक्तियों के लिए खुली हो ताकि आम आदमी की भी उस तक पहुंच सुनिश्चित हो सके। भेदमूलक सिद्धान्त यह मांग करता है कि प्राथमिक वस्तुओं के समान वितरण में किसी तरह की छूट को तभी मान्य ठहराया जा सकता है जब यह सिद्ध हो जाए कि इससे हीनतम स्थिति वाले लोगों को अधिकतम लाभ होगा। किसी व्यक्ति को असाधारण योग्यता और परिश्रम का लाभ तभी न्याय संगत होगा जब उससे समाज के दीन हीन व्यक्तियों को अधिक लाभ हो। इसलिए ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहिए जिससे प्राथमिक वस्तुओं का समान बंटवारा हो। परन्तु इन प्राथमिक वस्तुओं की अदला–बदली या विनिमय से बचना चाहिए। इसी तरह प्राथमिक वस्तुओं के असमान वितरण को केवल उसी परिस्थिति में मान्यता दी जाए जिससे कमजोर वर्ग को लाभ मिलता हो। विभेदमूलक सिद्धान्त की व्याख्या करने के बाद जॉन रॉल्स अवसर की समानता के सिद्धान्त की व्याख्या करता है। जॉन रॉल्स का कहना है कि अवसर की निष्पक्ष समानता यह मांग करता है कि सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को इस तरह व्यवस्थित किया जाए कि सबसे कम लाभान्वित व्यक्ति को अधिकतम लाभ मिले और सभी व्यक्तियों की विभिन्न प्रकार के पदों तक समान पहुंच हों। जॉन रॉल्स का कहना है कि जिनकी योग्यता तथा क्षमता का स्तर समान है तथा जो पद प्राप्ति की समान इच्छा रखते हैं, उन्हें यह देखे बिना कि किस जाति या आर्थिक वर्ग में पैदा हुए हैं, सफलता के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। जॉन रॉल्स का यह आग्रह है कि हमें अवसर को उचित समानता में बुद्धिमान व्यक्तियों को पद प्राप्ति के विचार से भ्रमित नहीं करना चाहिए। अवसर की समानता का सम्बन्ध कमजोर वर्ग को सौभाग्यशाली बनाना ही होना चाहिए ताकि समाज का सुविधाहीन वर्ग भी असुरक्षित महसूस न करे। जॉन रॉल्स का कहना है कि पदों को खुला रखने पर कम लाभान्वित व्यक्ति भी उन लाभों तक पहुंच सकते हैं जिनसे उनको विशेष अधिकारों से युक्त व्यवस्था में वंचित रखा गया था। कमजोर वर्ग योग्यता प्राप्त अधिकारियों द्वारा उनके लिए बनाए गए निर्णय–लाभों से उतना सुरक्षित महसूस नहीं करता जितना वह स्वयं प्रतिनिधित्व प्राप्त करके करता है। इस तरह राल्स वितरण की समस्या को उठाकर अपने न्याय सिद्धान्त को वितरणात्मक न्याय बना देता है जैसा अरस्तु द्वारा भी जिक्र किया गया था। यह वितरण की समस्या ही आधुनिक युग में न्याय की समस्या है जो न्याय के सिद्धान्तों का आधार है।

जॉन रॉल्स का वितरणात्मक न्याय (Distributive Justice) का सम्बन्ध प्रक्रियात्मक न्याय से है। इसका अर्थ यह है कि एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया जाए जो सामाजिक नीतियों के द्वारा न्याय प्रदान करे। इस प्रक्रियात्मक न्याय के लिए प्रक्रिया की उचितता की स्थापना हो। इसके लिए न केवल संस्थाओं की न्यायिक व्यवस्था की स्थापना आवश्यक है बल्कि उन्हें लागू करने के लिए निष्पक्ष रूप से प्रशासित भी होना चाहिए। न्यायिक मूल संरचना ही न्यायिक प्रक्रिया का आधार होती है और यह सरंचना एक न्यायपूर्ण राजनीतिक संविधान तथा आर्थिक एवं सामाजिक संस्थाओं की न्यायपूर्ण व्यवस्था से ही निर्मित होती है। इस प्रक्रियात्मक न्याय को प्राप्त किए बिना वितरणात्मक न्याय की बात करना बेईमानी है। इसके लिए मूल सरंचना पर विचार करना जरूरी हो जाता है। जॉन रॉल्स का मानना है कि न्याय के सिद्धान्त की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक परिस्थितियों का होना जरूरी है और ये आवश्यक परिस्थितियां ही मूल सरंचना ही न्याय का प्राथमिक विषय है। जॉन रॉल्स का कहना है कि न्याय के सिद्धान्त हेतु कुछ आवश्यक परिस्थितियों की आवश्यकता पड़ती है। इन पृष्ठभूमियों के बिना न्याय के किसी भी सिद्धान्त की कल्पना करना बेकार है। जॉन रॉल्स के अनुसार दशाएं हैं –

i- न्यायसंगत संविधान,

ii- राजनीतिक प्रक्रिया का उचित रूप से संचालन,

iii- अवसर की समानता एवं न्यूनतम सामाजिक आवश्यकताओं की गारन्टी।

जॉन रॉल्स ने कहा है कि सभी नागरिकों को समान स्वतन्त्रताएं प्राप्त होनी चाहिए, सरकारों का चयन और निर्माण उचित राजनीतिक प्रक्रिया द्वारा ही होना चाहिए, सभी की समान शैक्षिक, आर्थिक व राजनीतिक सुविधाएं प्राप्त रहें तथा लोगों को समान न्यूनतम सामाजिक आवश्यकताओं की गारन्टी मिले अर्थात परिवार भत्ता, बेरोजगारी भत्ता आदि की समुचित व्यवस्था हो। इन व्यवस्थाओं को बनाए रखने के लिए आवंटन, स्थिरीकरण, हस्तांतरण तथा वितरणात्मक संस्थाओं का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार जॉन रॉल्स ने न्याय सिद्धान्त में कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार किया है। जिनमें से प्राथमिक वस्तुओं, सेवाओं और लाभों की समस्या प्रमुख है। जॉन रॉल्स का न्याय शुद्ध प्रक्रियात्मक व वितरणात्मक स्वरूप रखता है। जॉन रॉल्स ने प्रक्रियात्मक तथा वितरणात्मक न्याय के द्वारा अपने सामाजिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया है। उसने सामाजिक न्याय को प्राप्त करने के लिए न्याय की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने पर बल दिया है और न्याय की प्रक्रिया निर्धारित करते समय सामाजिक न्याय के लक्ष्य को प्राथमिकता दी है। जॉन रॉल्स ने प्रक्रियात्मक न्याय को सामाजिक न्याय का उपकरण बनाने का प्रयास किया हैं इसी कारण जॉन रॉल्स ने कहा है– समाज रूपी कड़ी को मजबूत बनाने के लिए इसकी सबसे कमजोर कड़ी को ही तलाश करके बार बार सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया अपनाने पर ही जॉन रॉल्स का अधिक जोर रहा है। अतरू निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धान्त सामाजिक न्याय का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है और जॉन रॉल्स व उसकी पुस्तक Theory of Justice बीसवीं सदी के साथ–साथ आधुनिक युग में भी महत्व रखती हैं।

निष्कर्षः

राल्स ने न्याय के बारे में कुछ मतभेदी प्रष्न उठाए है। और उनके समाधान का प्रयत्न किया है। राल्स ने प्रक्रियात्मक न्याय के माध्यम से सामाजिक न्याय के लक्ष्य की पूर्ति का प्रयास किया है। न्याय संबंधी चिंतन को नई दिषा दी है। राल्स ने सामाजिक विषमता से मुक्त समानता आधारित समाज की संकल्पना प्रस्तुत की। जॉन राल्स के विचार न्याय की स्थापना करने में अत्यधिक प्रासंगिक है। जॉन राल्स का न्याय–सिद्धांत, अवसर की समानता, समान स्वतंत्रताओं, प्राथमिक वस्तुओं का न्यायपूर्ण वितरण, आय की समानता, संविधानिक लोकतंत्र का समर्थन, समाज के सद्गुण के रूप में न्याय की सर्वोच्च, सामाजिक कल्याण में वृद्धि आदि बातों पर विचार करके उदारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। राल्स ने सामाजिक न्याय को प्राप्त करने के लिए न्याय के लक्ष्य को प्राथमिकता दी है। राल्स ने प्रक्रियात्मक न्याय को सामाजिक न्याय का उपकरण बनाने का प्रयास किया है, इसी कारण राल्स ने कहा –''समाज रूपी कड़ी को मजबूत बनाने के लिए इसकी सबसे कमजोर कड़ी को ही तलाष करके बार–बार सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया अपनाने पर ही जॉन राल्स का अधिक जोर रहा है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि जॉन राल्स का न्याय सिद्धांत 'सामाजिक न्याय' का महत्वपूर्ण सिद्धांत है और जॉन राल्स व उसकी पुस्तक ए थ्योरि ऑफ जस्टिस' बीसवीं सदी के साथ–साथ आधुनिक युग में भी महत्व रखती है। रॉल्स जीवन भर न्याय के सिद्धांत की स्थापना में लगे रहे तथा उन्होंने सामाजिक विषमता से मुक्त समानता आधारित समाज की संकल्पना प्रस्तुत की।

संदर्भः

- गाबा ओम प्रकाष '' राजनीतिक–चिंतन की रूपरेखा'' मयूर पेपरबैक्स, ज्ञान खंड इंदिरापुरम दिल्ली
- जॉन रालस के न्याय का सिद्धांत 2003
- Rawls Johan 'A Theory of Justice' London, England
- http://www.drishtiias.com
- https://www.vokal.in